13. योजना (प्रोजेक्ट) विधि

वर्तमान शिक्षण विधियों में योजना विधि (Project Method) का महत्त्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा के क्षेत्र में 'प्रोजेक्ट' शब्द 20 वीं सदी में आया। शिक्षा में पुनः इस शब्द का प्रयोग गृह-कार्यों में किया गया परन्तु इस विधि के अधिक प्रसिद्धदाता डब्ल्यू.एस. किलपेट्रिक थे। किलपेट्रिक ने प्रोजेक्ट की परिभाषा इस प्रकार दी है:

"प्रोजेक्ट पूरे मन से किया जाने वाला सोद्देश्य कार्य है, जो सामाजिक वातावरण में सम्पन्न किया जाता है।"

स्टीफन ने इसे एक समस्यामूलक कार्य कहा है जो अपनी स्वाभाविक परिस्थितियों में सम्पन्न किया जाता है।

उक्त दोनों ही परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रोजेक्ट वह विधि है जिसमें किसी समस्या अथवा उद्देश्य को लेकर छात्र अथवा कोई भी व्यक्ति उसे स्वाभाविक वातावरण में पूरा करने का प्रयास करता है।

किलपेट्रिक ने विभिन्न प्रकार के प्रकल्पों को चार भागों में बाँटा है :

(i) किसी विचार अथवा योजना को सृजनात्मक रुप देना यथा भारत के धरातल के विचार को मॉडल का रुप देना।

(ii) जहाँ उद्देश्य भाव-निरुपण एवं सौन्दर्य हो; यथा मॉडल के आधार पर धरातल के उच्च भागों, पहाड़ी भागों तथा मैदानों को रगों के आधार पर एक सुन्दर मॉडल को पढ़वाना, पढ़ना तथा प्रश्न करना।

(ii) जहाँ किसी समस्या को सुलझाना हो; उदाहरणार्थ- बम्बई बन्दरगाह क्यों है? अहमदाबाद में सूती कारखाने अधिक क्यों स्थापित हैं?

(iv) जहाँ कार्य का उद्देश्य कुशलता पैदा करना हो; जैसे मानचित्र बनवाना, मानचित्रांकन कराना।

किसी भी प्रोजेक्ट को लेने के बाद उसे सम्पन्न करने के लिए कुछ निर्धारित पदों (Steps) को अपनाना होता है। प्रोजेक्ट में आवश्यक नहीं कि निम्न चरण ही हों, आवश्यकतानुसार अधिक भी हो सकते हैं। वैसे मुख्यरुप से चार पद होते हैं:

(1) उद्देश्य-निरुपण (Purposing)।

(2) योजना (Planning)।

(3) कार्यान्वित (Executing)।

(4) निर्णय (Judging)।

भूगोल में अनेकानेक बिन्दुओं को प्रोजेक्ट/ प्रकल्प (Project) विधि से पढ़ाया जा सकता है, परन्तु विशेषकर व्यावहारिक भूगोल (Practical Geography) तथा भूगोल के कौशल पक्ष के विकास के लिए यह विधि अत्यन्त उपयुक्त रहती है।

भूगोल में निम्न विषयों को प्रोजेक्ट विधि द्वारा भली प्रकार पढ़ाया या समझाया जा सकता है। :

(i) मॉडल निर्माण करवाना।

(ii) रिलीफ मानचित्र, मानचित्र, प्रक्षेप आदि बनवाना।

(iii) ग्लोब-निर्माण।

(iv) गृह-प्रदेश के भूगोल का अध्ययन।

(v) देशों के मानचित्रों में नदी, नहरें, पहाड़, शहर औद्योगिक प्रान्त आदि का अकंन।

(vi) देश के आवागमन के साधनों का अंकन (मार्ग)।

(vii) उद्योगों का स्थानीयकरण।

(viii) कृषि-पैदावार आदि।

(ix) हमारा देश तथा उसके राज्य : राजस्थान, उ०प्रद, म०प्र० आदि।

(x) हमारे पड़ोसी देश : नेपाल, चीन, पाकिस्तान, बंगलादेश आदि।

(xi) विकासमान देश जापान, रूस, अमेरिका।

(xii) हमारे महाद्वीप।

प्रोजेक्ट चुनने के पूर्व आवश्यक बातें

किसी भी प्रोजेक्ट को चुनने के लिए निम्न बातों पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है:

(i) प्रोजोक्ट ऐसा हो जिस पर छात्रों को स्वाभाविक वातावरण में कार्य करने का मौका मिले। यह व्यावहारिक जीवन से सम्बन्धित हो।

(ii) प्रोजेक्ट छात्रों की रुचि और ज्ञानेन्द्रियों के अनुकूल हो। छोटी कक्षाओं के प्रोजेक्ट आसान हों, तथा स्तरानुकूल कठिन होते जाने चाहिए।

(ii) प्रोजेक्ट पर सभी छात्रों के समान रूप से कार्य करने का मौका मिलना चाहिए।

(vi) प्रोजेक्ट में आवश्यक पूर्व-निर्देशन शिक्षक द्वारा दिया जाना अत्यावश्यक है।

(v) प्रोजेक्ट के उद्देश्य छात्रों के सामने स्पष्ट हो जाने चाहिए।

(vi) प्रोजेक्ट में यह नहीं हो कि प्रोजेट देकर शिक्षक अलग हो जाय वर्‌न शिक्षक एक निर्देशक की तरह साथ रहे और आवश्यकतानुसार मार्ग दर्शन देता रहे।

(vii) प्रोजेक्ट पूरा होने पर उस पर विचार-विमर्श होना चाहिए। क्या कठिनाई है? कैसे कार्य किया जाय कि यदि अन्य दूसरा प्रोजेक्ट लिया जाय तो अच्छा रहे?

(viii) छात्रों ने क्या सीखा है? शिक्षक को इसका अनवरत मूल्यांकन करना चाहिए।

प्रोजेक्ट द्वारा शिक्षण के उद्देश्य

(1) इसके द्वारा समूह में कार्य करने का अवसर मिलता है।

(2) सहयोग एवं मित्रता पूर्ण व्यवहार करने का प्रशिक्षण मिलता है।

(3) समान रुप से दायित्वों को वहन करने का अभ्यास मिलता है।

(4) प्रथम स्रोत द्वारा प्राप्त सूचना के कारण छात्रों का ज्ञान विश्वसनीय होता है।

(5) स्वयं कार्य करने से आत्मविश्वास बढ़ता है।

(6) मानचित्र, चार्ट, मॉडल आदि को पढ़ने का अभ्यास होता है।

(7) प्रदर्शनी आदि के संगठन का अभ्यास होता है।

(8) बुद्धि, शक्ति तथा संवेगों का अच्छा समन्वय होता है।

शिक्षक का मार्ग दर्शन

शिक्षक की भूमिका मुख्य रुप से एक मार्ग दर्शक एवं समन्वय कर्त्ता की है। जहाँ वह समस्या के सम्बन्ध में कि प्रोजेक्ट पर कैसे अध्ययन किया जाय, मार्ग दर्शन देता है,वहीं

विभिन्न छात्रों के कार्यों में समन्वय भी रखता है कि ताकि प्रोजेक्ट में सभी की शक्ति समान रूप से लगे तथा समान रूप से शैक्षिक लाभ हो।

शिक्षक को सर्वप्रथम कक्षा के लिए निर्दिष्ट पाठ्यचर्या से कुछ ऐसे विषय चुनने चाहिए जो प्रोजेक्ट विधि द्वारा संपादित हो सकते हैं। श्रेयष्कर होगा यदि विद्यार्थियों की मदद से प्रोजेक्ट के विषय चुने जायँ।

द्वितीय चरण में उसे विविध कार्य-कलाप निश्चित करने चाहिए जो विद्यार्थी करेंगे तथा वास्तविक क्षेत्र में (विद्यार्थी) कौन-कौन सी प्रवृत्तियों पर कार्य करेंगे, ताकि विषय का गहराई से अध्ययन किया जा सके। प्रवृत्ति विभाजन के समय छात्रों की रुचि तथा योग्यता का भी ध्यान रखा जाय कि कौनसा विद्यार्थी अच्छा चार्ट, मानचित्र, मॉडल आदि बना सकता है।

तृतीय चरण में विद्यार्थियों को समूह में विभाजित किया जाय तथा यह निश्चित किया जाय कि प्रत्येक समूह का एक जिम्मेदार, साहसी एवं योग्य विद्यार्थी नेता हो। अन्त में प्रोजेक्ट के विषय के अनुसार समय की अवधि निश्चित करें।

अन्य-

(1) शिक्षक यह जाने की प्रोजेक्ट कैसे बनाए जाते हैं? तथा इसकी क्रियान्विति के क्या चरण होते हैं?

(2) विषय वस्तु का पूर्ण ज्ञान हो, अन्यथा प्रोजेक्ट से विद्यार्थियों को अधिक लाभ नहीं होगा।

(3) नेतृत्व क्षमता एक आवश्यक अर्हता है, तभी शिक्षक या छात्र नेता सभी को साथ लेकर चल सकता है।

(4) धैर्य, प्रोजेक्ट पूरा करने में अनेक कठिनाइयाँ, रूकावटे आती हैं। जिनका धैर्य के साथ ही मुकाबला किया जा सकता है।

(5) रुचि तथा साहस भी प्रोजेक्ट संपादन के लिए अनिवार्य अर्हता है जो प्रोजेक्ट निर्देशक या शिक्षक में होनी चाहिए।

(6) बाल मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञान।

वित्तीय व्यवस्था

प्रोजेक्ट या अन्य ऐसे कार्यक्रम हैं जिसमें विद्यालय में उपलब्ध राशि के अलावा अधिक वित्तीय व्यवस्था की आवश्यकता पड़ती है, तब अधोलिखित कार्यक्रम अपनाये जा सकते हैं। परन्तु ये कदम तभी उठाये जायें जब प्रोजेक्ट की रूपरेखा स्पष्ट प्रभावी तथा उपयोगी हो।

(1) समुदाय के लोगों, अभिभावकों से चन्दा संग्रह,

(2) नगरपालिका, सरकार आदि से अनुदान की पूर्व स्वीकृति,

(3) स्मारिका आदि निकाल कर विज्ञापन आदि प्राप्त करना,

(4) शिक्षा निदेशालय, बोर्ड तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद से अनुदान प्राप्त करना।

प्रोजेक्ट के मुख्य कार्यक्रम

प्रोजेक्ट के मुख्य कार्यक्रम जिनसे प्रोजेक्ट आकर्षक तथा अधिक उपयोगी है सकता है वे अधोलिखित हो सकते हैं -

(1) **मानचित्र, अंकन एवं रेखाचित्र अंकन की प्रतियोगिता-** शिक्षक द्वारा इस प्रकार की प्रतियोगिता आयोजित की जा सकती है जिसमें प्रोजेक्ट के विविध चरणों के मानचित्र बनवाये जा सकते हैं। उदाहरणार्थ यदि गंगा प्रोजेक्ट लें तो गंगा जहाँ से निकलती है उस स्थान की स्थिति का, इसके प्रभाव का, इसके द्वारा सिंचित क्षेत्र का, प्रभावित जनसंख्या का, धार्मिक क्षेत्रों आदि के मानचित्र बनाये जा सकते हैं।

(2) **पत्रवाचन प्रतियोगित।-** प्रोजेक्ट के पूर्व होने के बाद छात्रों को एक लेख लिखने को कहा जाय जिसे वे विभिन्न दृष्टिकोण से सभी छात्रों के समक्ष पत्र वाचन द्वारा प्रस्तुत करें। इस तरह विभिन्न दृष्टिकोण तथा क्षेत्रों का ज्ञान छात्रों को हो सकता है। इसके लिए वे पुस्तकालय, यदि विदेशों से सम्बन्धित होतो विदेशी दूतावासों से संपर्क किया जा सकता है। गंगा के सम्बन्ध में गंगा का प्रवाह क्षेत्र इसके धार्मिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्त्व, राष्ट्रीय एकता के लिए महत्त्व, कृषि एवं जन संख्या पर प्रभाव, आदि पर पत्र वाचन हो सकता है।

(3) **प्रदर्शनी-** प्रोजेक्ट से सम्बन्धित मानचित्र, रेखाचित्र, मॉडल, पोस्टर, बुलेटिन बोर्ड फिल्म स्लाइड्स तत्सम्बन्धी जन-जीवन की वेशभूषा, रीति-रिवाज आदि संबंधित चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित की जानी चाहिए जिसमें समूदाय तथा अभिभावकों को भी आमन्त्रित किया जाना चाहिए।

इससे विद्यार्थियों के साथ-साथ उनके अभिभावकों का भी ज्ञानवर्धन होगा साथ ही विद्यालय तथा विद्यार्थियों का मनोबल भी बढ़ेगा।

(4) **उत्सव-** अन्त में एक उत्सव मनाना चाहिए जिसमें बाहर के शिक्षक प्रतिनिधियों को, समुदाय के लोगों को आमन्त्रित किया जाना चाहिए। इसी उत्सव में छात्रों के मनोबल बढ़ाने के लिए छात्रों द्वारा पत्रवाचन, प्रदर्शनी विशेषताओं, प्रोजेक्ट विवरण, उपलब्धियों का विवरण आदि प्रस्तुत किये जाने चाहिये।

(5) **मूल्यांकन-** अन्त में प्रोजेक्ट का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। इसमें प्रत्येक क्षेत्र तथा समूह दोनों के कार्यों का मूल्यांकन होना चाहिए। जहाँ कमजोरी है, वहाँ भविष्य के लिए मार्ग दर्शन तथा अच्छे कार्य की प्रशंसा होना चाहिए। प्रतियोगिता में जीतने वालों को पारितोषिक तथा प्रमाण पत्र दिया जाना चाहिए। अन्त में एक परीक्षा लेनी चाहिए। यह भी हो सकता है प्रोजेक्ट शुरु होने से पहले भी उस विषय पर एक जाँच करली जाय ताकि इसकी सार्थकता को देखा जा सके।

14. समस्या समाधान विधि

योजना विधि के समान ही एक और अन्य विधि है- समस्या समाधान विधि। इसे परीक्षण विधि भी कहा जाता है। पाठ को आकर्षक बनाने एवं छात्रों के अधिकाधिक सहयोग हेतु शिक्षक समस्या विधि का प्रयोग करता है। यह विधि प्रायः मानसिक शंकाओं के समाधान के लिए काम में लाई जाती है। इस तरह यह विधि कम से कम माध्यमिक स्तर पर ही शुरू की जा सकती है।